कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली द्वारा जलवायु अनुकूल किस्में, प्रौद्योगिकियाँ, कृषि कार्य एवं पशुपालन विषयों पर कृषक-वैज्ञानिक वार्तालाप का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली द्वारा आज दिनाँक 28 सितम्बर, 2021 द्वारा जलवायु अनुकूल किस्में, प्रौद्योगिकियाँ, कृषि कार्य और पशुपालन विषयों पर एक कृषक-वैज्ञानिक वार्तालाप का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने वेबकास्टिंग के माध्यम से उपस्थित कृषकों को सम्बोधित करते हुये कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से मुक्त करने हेतु भाकृअनुप- राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान रायपुर में पाँच नई प्रजातियां अवमुक्त की जा रही है जो मौसम की चुनौतियों से निबटने में सक्षम है। कुछ प्रजातियाँ कम पानी मे, कुछ खारे पानी में, कुछ बीमारियों के प्रतिरोधी है। 11 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड अलग अलग चरणों में वितरित किये गए है, जो कृषकों को उसकी मृदा का स्तर बताकर फसलों के पोषण प्रबंधन में सहायक हो रहा है। पानी बचाने के लिये माइक्रो इरीगेशन के क्षेत्र में प्रयास निरंतर जारी है। किसान ऊर्जा उत्पादक तथा ऊर्जा प्रदाता बने, इसके लिये कुसुम योजना चलायी जा रही है। इसका प्रभाव सिर्फ फसल उत्पादन पर ही नहीं अपितु उनमे लगने वाले कीट बीमारियों, मौन पालन, पशुपालन, मत्स्य पालन सहित कृषि के सभी विधायों पर पड़ता है । अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 भी हमारे लिये अपने मिलेट उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में ले जाने का सुअवसर है। अत: हेमा एस बारें में जागरूक होने की आवश्यकता है ।

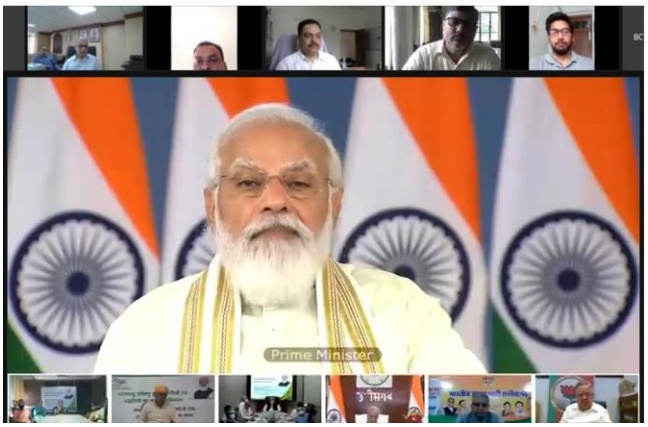

कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से उपयोगी जलवायु अनुकूल क़िस्मों, प्रौद्योगिकियों और कृषि कार्यों तथा पशुपालन के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गयी कि इसके लिये देश में भारतीय कृषि अंसन्धान परिषद के विभिन्न संस्थानों तथा उनके अनुसंधान केन्द्रों द्वारा अलग-अलग परिस्थितियों के लिये अलग-अलग प्रजातियाँ, तथा तकनीकें विकसित की गई हैं जिनका प्रयोग करने पर जलवायु सम्बन्धी बदली हुई परिस्थितियों का फसल उत्पादन पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। किसान भाई बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार प्रजातियों, तकनीकों का चयन करके अपने उत्पादन में स्थिरता बनाये रख सकते है। इसके लिये किसान भाई निकटवर्ती कृषि विज्ञान केन्द्रों, अनुसंधान संस्थानों तथा कृषि विश्वविद्यालयों से सलाह ले सकते हैं।

खरीफ का मौसम समाप्ति की ओर है और धान की फसल की कटाई के साथ ही पराली प्रबन्धन की भी व्यवस्था किसान भाइयों को करनी होगी इसको ध्यान में रखते हुये किसान भाइयों को पराली जलाने से होने वाले नुकसान, खेत में ही पराली प्रबन्धन की तकनीक, इसके लिये उपयोगी कृषि यन्त्रों तथा वेस्ट डिकम्पोजर और बायो डिकम्पोजर से पराली प्रबन्धन के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई। इस अवसर पर उनके लिये पराली प्रबन्धन के विभिन्न यन्त्रों का प्रदर्शन भी किया गया। इस कार्यक्रम में भुता विकास खण्ड के लगभग 131 कृषकों, कृषक माहिलाओ, युवाओं एवं कृषि विज्ञान केंद्र एवं संस्थान के 14 वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।